THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

अपने लिये उचित नौकरी ढूंढो
Find the right job for you

Author: Name with held
28 April,2000
The Christian Science Monitor

मेरे देश भारत में बहुत से लोगों, खासकर युवकों के पास नौकरी नहीं है। अपने बच्चों को उचित पेशे में डालने की माँ–बाप की योजनाऐं निरर्थक सिद्व हो रही हैं। लेकिन कोई भी **परमेश्वर** पर भरोसा कर के अच्छी नौकरी की अपनी खोज़ में संतोषजनक परिणाम प्राप्त कर सकता है।

परमेश्वर अनन्त अच्छाई है और **उसके*** पास **अपने** हर एक बच्चे के लिये रोज़गार की अनन्त पूर्ति है। हम इसे अपनी जिन्दगियों में प्रमाणित कर सकते हैं।

क्राइस्ट जीसस ने हमें मार्ग दिखाया। उन्होंनें अपने जीवन तथा पेशे के हर अंश में **परमेश्वर** के निर्देश का पालन किया। उन्होंनें लोगों को सिखाया कि सहायता के लिए **परमेश्वर** की शरण में कैसे जायें। उन्होंनें कहा, ''ऐसा मत सोचो, यह कहते हुये कि हम क्या खायें? या, हम क्या पियें? या हम क्या पहनें? क्योंकि तुम्हारा स्वर्गिक **पिता** जानता है कि तुम्हें इस सब चीज़ों की जरुरत है। अपितु पहले **परमेश्वर** के साम्राज्य तथा उसकी धार्मिकता को पाने की कोशिश करो : और यह सब चीज़े तुम्हें दे दी जायेंगी'' (मत्ती 6:31–33)

जीसस का कारोबार भलाई करना था। उनका उद्देश्य **परमेश्वर** की इच्छा के अनुसार कार्य करना था। एक बार जब वह बारह साल के थे और उनका परिवार जरुसलम में था, वे अपने माँ–बाप से अलग हो कर मंदिर में उपदेशकों के साथ बैठ गये, उन को सुनते हुये और उन से प्रश्न पूछते हुये। जब उनके माता–पिता ने उन्हें मन्दिर में पाया तो उनकी माता ने उनसे पूछा कि वे उनसे अलग क्यों हो गये थे। उन्होंनें उनका यह प्रश्न पूछ कर उत्तर दिया, ''आपने मुझे क्यों ढूँढा? क्या आप नहीं जानते कि मुझे अपने पिता के कारोबार में होना चाहिये?'' (लूका 2:49)

जब हम **परमेश्वर** की शरण में जाते हैं, **उसकी** इच्छा जानने के लिये और **उसे** सुनने के लिये, वह हमारा मार्ग–दर्शन करता है। **परमेश्वर** के बच्चे होने के नाते, **उसके** रुप में बने होने के कारण हमारा असली स्वभाव बुद्धिमता, ज्ञान, धैर्य, प्रेम को अभिव्यक्त करता है। इनमें से हर एक गुण का स्रोत्र **परमेश्वर** में है। **परमेश्वर** ही हमारा मालिक है। हमारा वास्तविक कारोबार दैनिक जीवन में अच्छाई को अभिव्यक्त करना है।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह **परमेश्वर** के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

हमारी बेटी ने यह देखा। फिर भी कार्य प्रशिक्षण के बावजूद वह नौकरी नहीं ढूँढ पाई। जो कुछ भी प्रयत्न हमने किये, वह असफल रहे और हम सारी कोशिश बंद करने और प्रार्थना करने के लिए तैयार थे। हमें बाईबल में जोसॅफ के जीवन के विवरण से शक्ति मिली। उसे अजनबी लोगों को बेच दिया गया था और बाद में कैद में रखा था। लेकिन दिव्य मार्गदर्शन में उसका यकीन तथा परमेश्वर की सर्वशक्ति में उसका विश्वास नहीं डगमगाया। उसने शाँति से परमेश्वर के निर्देश को सुना। उसने इस निर्देश का पालन किया और आखिर में वह देश का शासक बन गया।

साँयस एंड हैल्थ विद् की टू दि स्क्रिपचर्स में मेरी बेकर एडी के इस कथन ने भी हमारी सहायता की, "जो पालनहार अनन्त का सहारा ले रहे हैं, आज का दिन उनके लिये आशीषों से भरपूर है।" (पृष्ठ vii) इससे परमेश्वर की हमारी समझ उसके अनन्त प्रेम होने तक उन्नत हुई।

हमारी बेटी की प्रार्थना उसकी वह सब करने की इच्छा थी जो कुछ भी परमेश्वर उससे करवाना चाहता था उसने उज्जवल भविष्य के लिये परमेश्वर की इच्छा जाने की कोशिश की। अपनी माता के प्रोत्साहन से उसने हिन्दी पण्डित प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण किया, एक कार्यक्रम जो योग्यता–प्राप्त स्नातकों को हाई–स्कूल के स्तर पर हिन्दी पढ़ाने का प्रशिक्षण देता है। वह हिन्दी पण्डित–भर्ती परीक्षा में बैठी, परीक्षा में पहले सात स्थानों में से एक स्थान प्राप्त किया और इंटरव्यू में सफल हुई।

फिर उसकी एक आंतरिक गाँव के स्कूल में अप्रेंटिस की नियुक्ति हुई, जो उसके पति के क्षेत्र से बहुत दूर था। उनका बच्चा बहुत छोटा था और उस गाँव में उसका बच्चे के साथ अकेले रहना सुरक्षित नहीं माना गया। इसलिये उसे प्रतिदिन छः घंटे सफर करना पड़ा दोनों तरफ तीन–तीन बसें बदलते हुए। उसे यह बहुत कुंठित लगा।

हमने यह जानने के लिये प्रार्थना की कि परमेश्वर का प्रावधान तथा सुरक्षा कभी असफल नहीं हो सकते और यह कि वह परमेश्वर का विचार है। इसलिये असल में कुंठा का कोई कारण नहीं था। हम जानते थे इंसानी परिस्थितियाँ कितनी भी निराशाजनक क्यों न दिखाई दें वे परमेश्वर की उपचारक शक्ति के सामने शक्तिहीन हैं।

बदलाव धीरे–धीरे आये। सरकार ने, अपनी ही मर्जी से कुछ समय के लिये अप्रेंटिसशिप की अवधि में स्थानान्तरण पर पाबंदी के नियम में छूट दे दी और हमारी बेटी का स्थानान्तरण एक स्कूल में हो गया, जो उसके घर के पास था। वहाँ का स्थान कुछ ही समय पहले एक औरत के द्वारा खाली किया गया था, वह भी परमेश्वर की तरफ सहायता के लिये देख रही थी और अपनी पसंद के स्थान पर स्थानान्तरित हो सकी। दोनों औरतें प्रसन्न थी।

परमेश्वर की भरपूर अच्छाई ने इसे संभव बनाया था। परमेश्वर को सुन कर, सभी उसके अद्भुत निर्देशन को महसूस कर सकते हैं। हमारा असली कारोबार उसे अभिव्यक्त करना, और उसे गौरान्वित करना है।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.